MOTIVATION

प्रेरणा

फ्रांस के शहर..... पृष्ठ 216

प्रेरणा समाप्ति के मुख्य कारण पृष्ठ 239

प्रेरणा आती कहाँ से है..... पृष्ठ 222

धन के लालच का अन्त कहाँ है?..... पृष्ठ 247

एक जैसी परिस्थिति में दो अलग–अलग प्रेरणा पृष्ठ 229

सिर्फ भगवान के भरोसे पर नहीं..... पृष्ठ 255

MOTIVATION

प्रेरणा

प्रेरणा रक्त की वह बूँद है जो इंसान को जिन्दा रखती है।

—राम बजाज

आखिर प्रेरणा है क्या ?
At last what is Motivation ?

हर व्यक्ति अपने-आप में खास होता है। हर व्यक्ति में कुछ-न-कुछ खास करने की इच्छा होती है—ज्योति होती है। इस ज्योति की लौ को जलाना ही मनुष्य की प्रेरणा को जाग्रत् करना होता है।

अतः प्रेरणा का तात्पर्य मनुष्य की भावना को जगाना व उसमें जान डाल देना ही है।

कार का खाली इंजन, शुरू (start) नहीं हो सकता चाहे उसमें चाबी डालकर कितनी बार भी चलाने की कोशिश की जावे। परन्तु अगर पैट्रोल डालकर इंजन स्टार्ट (शुरू) करें तो तुरन्त कार का इंजन स्टार्ट हो जावेगा। गाड़ी के पेट्रोल को प्रेरणा समझें। यही बात मनुष्य पर लागू होती है। जरूरत सिर्फ इस बात की रहती है कि इस भावना-रूपी इंजन को पैट्रोल (प्रेरणा) डालकर इन कार्यों व भावनाओं में जागृति पैदा करना है। यही प्रेरणा है।

प्रेरणा की तकनीकी परिभाषा क्या है ?
What is the Technical Definition of Motivation?

अभिप्रेरणा या प्रेरणा किसी व्यक्ति को अथवा स्वयं को किसी इच्छित कार्य को करने के लिए प्रेरित करने की क्रिया है।

Motivation is the act of stimulating some one or himself to get desired course of action.

मुख्यतः प्रेरणा एक मनोवैज्ञानिक तथ्य है जिसका सम्बन्ध आदमी की उन आन्तरिक शक्तियों (Internal forces) से होता है जो उसे—स्वयं को—एक निश्चित ढंग से ज्वलित होने अथवा न होने के लिए उत्तेजित करती हैं।

प्रेरणा से स्वयं को अथवा व्यक्ति को मानसिक अथवा मनोवैज्ञानिक रूप से तैयार करना आवश्यक होता है।

सभी मनुष्यों में कार्य करने की शारीरिक, बौद्धिक व तकनीकी क्षमता तो हो सकती है और काफी हद तक सभी मनुष्य जाति में होती भी है—परन्तु काम करने की इच्छा (Willingness to work) सभी मनुष्यों में हो—यह आवश्यक नहीं तथा होती भी नहीं है।

अतः उसमें या स्वयं में कार्य करने के प्रति रुचि (इच्छा) पैदा करना, या पैदा होना, उस इच्छा को बरकरार रखना एवं वृद्धि करना ही प्रेरणा कहलाता है।

फ्रांस के शहर पेरिस की जेल में एक कैदी अपने जीवन में बुरे काम का नतीजा—20 साल की कैद भोग रहा था। उसने अपनी भयानक आर्थिक कमजोर स्थिति के कारण निराश होकर एक आदमी की हत्या करने की कोशिश की थी। उसकी शराफत के कारण उसके कैद के कुछ वर्षों में सरकार ने कटौती कर दी थी।

दुर्भाग्यवश एक अन्य कैदी एक महीने के लिए सजा काटने उसके बैरक में साथ रखा गया। यह कैदी पूर्व में एक युवा व्यवसायी था, परन्तु व्यापार में बहुत अधिक घाटे के कारण उसने आत्महत्या करने का प्रयास किया था। आत्महत्या के इस प्रयास में पकड़ा गया और उसको एक महीने जेल की सजा सुनाई गई।

20 साल की सजा भोग रहे पहले कैदी को जब यह जानकारी हुई तो उसने दूसरे कैदी को समझाया कि 'तुम अभी जवान हो तथा स्वास्थ्य भी ठीक है। एक महीने बाद तुम जेल से छूट जावोगे। असफलता गिरने में नहीं, असफलता हार मान लेने में है। महापुरुषों

ने असफलता को सफलता की सीढ़ी समझा था। इंसान की सबसे बड़ी कमजोरी ठोकर खाकर गिर जाने में नहीं है, बल्कि गिर कर न उठने में है। मायूसी छोड़कर और नए सिरे से कठिन मेहनत करके अपना नया काम शुरू करो। कामयाबी निश्चित मिलेगी।'

10 साल से कैद भुगत रहे कैदी से ऐसे प्रेरक शब्द सुनकर वह बड़ा प्रभावित हुआ। उसने अपने मन में सोचा कि यह कैदी—जो बिल्कुल बरबाद हो चुका है, यदि यह भी जीवन को इतनी आशा से देख सकता है, तो मेरे जीवन में तो अभी बहुत-सी आशाएँ शेष हैं।

दूसरा कैदी एक महीने की जेल से छूटने के बाद पुनः अपने धन्धे में दुगने जोश और उत्साह के साथ जुट गया और आज वो बहुत बड़ा धनी व्यापारी है तथा सभी तरह से प्रसन्न है।

वह बताता है कि 'मेरी इस सफलता का रहस्य उस कैदी की प्रेरणा ही है जिसने मुझे नये जीवन को शुरू करने को प्रेरित किया।'

कभी-कभी यह हो सकता है कि असफलताओं के कारण, हीन भावनाओं के कारण अथवा गलत आदत के कारण, आप अपने-आप को हीन समझने लगते हैं।

हो सकता है कि चिन्ता के किन्हीं क्षणों में या अचानक कोई ठेस लगने से आपके अपने मन में—प्रेरणा से असली शक्तिरूपी—अन्तःप्रेरणा का ज्ञान हो जावे।

तब आपकी शक्ति (भावना) जाग उठेगी।

आप उस समय कुछ कर गुजरने का बीड़ा उठाने की सोचोगे। इसके लिए आपको एक चिनगारी फेंकने की आवश्यकता है। फिर तो अपने-आप उस चिनगारी से शोले भड़क उठेंगे, प्रचण्ड ज्वाला बन जावेगी और आप कहाँ से कहाँ पहुँचना चाहोगे। यहाँ अंतरात्मा प्रेरित होवेगी।

हर इंसान के अन्दर एक इन्सान और छुपा रहता है। परन्तु वो इन्सान कभी-कभी सोया होता है। जरूरत है उसको जगाने की। वो तभी जागता है जब उसको प्रेरणा-रूपी दवा पिलाई जावे। प्रेरणा-रूपी दवा पीते ही वह अत्यन्त पराक्रमी और बहादुर हो जाता है और सारी इच्छाओं को

प्रयत्न करके पूरी करने की चेष्टा करता है और अन्त में वह कामयाब होता है।

यह एक कार्यपरायण प्राणी होता है। आत्मविश्वास का सूर्य—प्रेरणा के निकलते ही यह व्यक्ति जाग उठता है।

आपके अन्दर ऐसा ही इन्सान है। पर जब तक यह सोता रहेगा, तब तक आप कुछ नहीं कर पायेंगे। इस सोये हुए को जगाने वाले को प्रेरक कहते हैं। तथा आपके अन्दर जो दूसरा इन्सान (भावना) होता है—उसको जगाने वाले को प्रेरणा कहते हैं।

कामयाबी के द्वार खोलने के लिए प्रेरणा की चाबी आपके पास है। अतः प्रेरणा से इन दरवाजों को खोलते रहिए।

यह बहुत बड़े दुःख की बात होगी कि बहुत-सारे लोग जीवन-भर अपने लिए किसी जादू या चमत्कार की प्रतीक्षा करते रहते हैं।

उन्हें सदा यही आशा नजर आती है कि किसी जादू के सहारे उनका भाग्य बदल जावेगा—यह उनकी भूल है। उनको पता होना चाहिए कि भाग्य को बदलने का जादू अभी इस संसार में नहीं है।

भाग्य का जादू सिर्फ आप हैं और आप अपने परिश्रम से, लगन से, लक्ष्य से उसे बदल सकते हैं। इस भाग्य को बदलने के लिए आपको प्रेरणा की जरूरत है। प्रेरणा कभी भी, कहीं से भी, किसी भी वक्त प्राप्त की जा सकती है। जरूरत है इस प्रेरणा-रूपी आत्मविश्वास को जाग्रत् करके जिन्दगी में कामयाबी पाने की। कुछ अच्छा काम कर गुजरने की।

बिजली के तारों में करंट होता है—हम देख नहीं सकते, परन्तु यह करंट अपना काम निरन्तर करता रहता है।

आपके शरीर में भी करंट है—हम देख नहीं सकते। परन्तु यह करंट जब प्रेरणा में बदल कर लक्ष्य का रूप परिश्रम के साथ धारण कर ले—तो हम इस करंट को देख सकते हैं। आप इस छुपी हुई करंट की शक्ति को पहचान कर एक अच्छे उद्देश्य के साथ जीवन में कूद पड़ें। कामयाबी आपके कदमों को चूमेगी।